This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2388 **HC**

Unique Paper Code : 52051316

Name of the Paper : Hindi 'B'

Name of the Course : **B.Com. (Prog.) CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. हिंदी कहानी के विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

हिंदी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2. बूढ़ी काकी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

कहानी कला के तत्त्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए।

3. 'भेले का ऊँट' नामक निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

P.T.O.

अथवा

हरिशंकर परसाई के 'सदाचार का ताबीज' में व्यक्त व्यंग्य की विवेचना कीजिए।

4. 'अंधेर नगरी' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

अथवा

'बिबिया' संस्मरण के आधार पर बिबिया की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

5. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए :

खड़ी बोली गद्य का विकास और द्विवेदी युग

अथवा

भारतेंदु युग और नाटक विद्या

6. व्याख्या कीजिए :

(क) लड़ाई के समय चाँद निकल आया था, ऐसा चाँद जिसके प्रकाश को संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है। हवा ऐसी चल रही थी कि बाणभट्ट की भाषा में 'दंतवीणोपदेश' कहलाती है। वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन भर की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी जब मैं दौड़ा दौड़ा सूबेदार पीछे गया था। सूबेदार लहनासिंह से सारे हाल सुन और कागज पाकर वे उसकी तुरंत-बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे तू न होता तो आज मारे जाते।

अथवा

रात को ग्यारह बज गये थे। रूपा आँगन में पड़ी सो रही थी। लाडली की आँखों में नींद न आती थी। काकी को पूड़ियाँ खिलाने की खुशी उसे सोने न देती थी। उसने पूड़ियों की पिटारी सामने रखी थी। जब विश्वास हो गया कि अम्मा सो रही हैं, तो वह चुपके से उठी और विचारने लगी, कैसे चलूँ। चारों ओर अंधेरा था। केवल चूल्हों में आग चमक रहीं थी और चूल्हों के पास एक कुत्ता लेटा हुआ था। लाडली की दृष्टि सामने वाले नीम पर गयी उसे मालूम हुआ कि उस पर हनुमान जी बैठे हुए हैं। उनकी पूँछ, उनकी गदा स्पष्ट दिखलाई दे रही है। मारे भय के आँखे बंद कर ली। इतनें में कुत्ता उठ बैठा। लाडली को ढाढस हुआ। कई सोए हुए मनुष्यों के बदले एक भागता हुआ कुत्ता उसके लिए अधिक धैर्य का कारण हुआ। उसने पिटारी उठायी और कोठरी की ओर चली।

(ख) एक दरबारी ने कहा, 'हुजूर वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है वह बहुत बारीक होता है। हमारी आँखे आपकी विराटता देखने की इतनी आदी हो गई है कि हमें बारीक चीज नहीं दिखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी, क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी ही सूरत बसी है। पर अपने राज्य में एक जाति रहती है जिसे 'विशेषज्ञ' कहते हैं। इस जाति के पास कुछ ऐसा अंजन होता है कि आँखों को आंजकर वे बारीक चीज भी देख लेते हैं। मेरा निवेदन है कि इन विशेषज्ञों को ही हुजूर भ्रष्टाचार ढूँढने का काम सौपें।'

अथवा

नागरिक समाज इसे छोटा काम करने वालों की बड़ी धृष्टता भी सकता है, पर मुझे कभी ऐसा नहीं लगता। संभवतः इसका कारण संस्कार हों। अपनी और अपने पिता की ग्रामीण ननसाल में मुझे नाइन को बदमों नानी, बूढ़े बरेठा को ननकू दादा कह कर पुक पड़ता था। वहाँ कोई छोटे से छोटा काम करने वाला भी इतना अ नहीं होता कि बड़े काम करने वालों से ऐसे पारिवारिक संबोधन न सके। इसी विशेषता के कारण वहाँ नागरिक अर्थव्यस्था को प्रश्र नहीं मिलती।